NATIONAL HEALTH MISSION
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

National Leprosy Eradication Programme

सत्यमेव जयते

Ministry of Health
& Family Welfare
Government of India

आशा प्रशिक्षक
मार्गदर्शक पुस्तिका - कुष्ठ रोग

World Health Organization
India

राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम

राष्ट्रीय कुष्ठ रोग नियंत्रण कार्यक्रम वर्ष 1955 में केन्द्रीय सहायता प्राप्त कार्यक्रम के रूप में प्रारम्भ किया गया। वर्ष 1983 में इसका नाम बदलकर राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन (National Leprosy Eradication Programme, NLEP) कार्यक्रम कर दिया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य

- कुष्ठ रोग के आरम्भिक चिन्ह तथा लक्षणों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और रोग के बारे में फैले भ्रम-भय को दूर करना
- कुष्ठ रोग के निदान (diagnosis), इलाज़ (treatment) और जटिलताओं के प्रबंधन की सभी स्वास्थ्य केन्द्रों में व्यवस्था
- कुष्ठ रोगियों को इलाज़ कराने के लिए प्रेरित करना
- प्रत्येक स्वास्थ्य कार्यकर्ता को कुष्ठ रोग और उसके प्रबंधन की पूरी जानकारी देना
- सभी कुष्ठ रोगियों का पूरा इलाज़ सुनिश्चित करना

कुष्ठ रोग क्या है?

कुष्ठ बहुत ही कम संक्रामक रोग है जो रोगाणुओं (Mycobacterium leprosy - बैक्टीरिया) के कारण होता है। यह मुख्य रूप से त्वचा और तंत्रिकाओं को प्रभावित करता है। यह रोग धीरे-धीरे बढ़ता है और औसतन संक्रमण के 3 वर्ष (incubation period) बाद लक्षण प्रत्यक्ष रूप से दिखने लगते हैं। कुष्ठ रोग किसी भी आयु के स्त्री, पुरुष या बच्चों को हो सकता है। बहुऔषधि इलाज (Multi drug Therapy-MDT) जिसमें दो या तीन प्रकार की दवाईयाँ होती है, कुष्ठ रोग का पूर्ण उपचार है। इलाज की अवधी 6 महीने अथवा 12 महीने है। उपचार कुष्ठ रोग को फैलने से रोकता है। कुष्ठ रोग का उपचार सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों व अस्पतालों में निशुल्क

उपलब्ध है। कुष्ठ रोग की शीघ्र पहचान और इलाज रोगी को विकृतियों से बचाता है।

राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम आशा की भूमिका

- अपने क्षेत्र के सभी लोगो को कुष्ठ के प्रति जागरूक करना और कुष्ठ के लक्षणों के विषय में बताना
- अपने नियमित कार्यों के दौरान और विशेष अभियानों के समय अपने कार्य क्षेत्र में ऐसे व्यक्तियों और बच्चों को चिन्हित करना जिनमें कुष्ठ रोग के संभावित लक्षण हैं
- संभावित कुष्ठ रोगियों को तत्काल जाँच और रोग की पुष्टी के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अथवा अस्पताल पर ले कर जाना या भेजना
- अपने क्षेत्र के सभी कुष्ठ रोगी जिनका इलाज चल रहा है उन्हें नियमित रूप से MDT दवाऐं उपलब्द करने में सहयोग करना और खाने के लिए प्ररित करना
- कुष्ठ रोग से सम्बंधित जटिलताओं के विषय में रोगियों को अवगत करना
- कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति जिनको इलाज के दौरान या इलाज पूरा करने के बाद किसी तरह की कुष्ठ राग सम्बंधित समस्याओं के निवारण में सहयोग करना, परामर्श देना
- कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति जिनमें अक्षमता अथवा विकृति है उन्हें हाथ, पैर, आँखों की सुरक्षा, देखभाल, व्यायाम करने की विधि समझाएं और प्रेरित करना
- अपने क्षेत्र के सभी कुष्ठ प्रभावित रोगी, उनके परिवार जन एवं समाज को रोगियों की सहायता करने के लिए प्ररित करना
- कुष्ठ रोगियों के इलाज, अक्षमता, विकृतियों और जटिलताओं का विवरण PHC/CHC पर Treatment Register, Disability Register, Lepra Reaction and Neuritis Register में अकिंत (entry) करवाना

कुष्ठ रोग के लक्षण पहचानें

त्वचा

- शरीर पर दाग
  - त्वचा के रंग से हल्के रंग के
  - लाल अथवा ताबें के रंग के
  - दाग में सुन्नपन, सूखापन
  - दाग में रोएं झड़ गये हैं
  - दाग में पसीना नहीं आता है
- त्वचा पर लाल रंग के उभरे हुए, सूजन वाले धब्बे
- त्वचा में मटर के दाने जैसी गाठें
- कान की त्वचा में गाठें, मोटापन
- चेहरे की त्वचा चमकदार और तैलिय (oily)
- भौओं (eyebrow) का झड़ जाना

तंत्रिकाएं

- बाहं, कोहनी, हाथ, घुटने, पन्जे की तंत्रिकाओं (nerve, नसों) में सूजन, मोटापन, झनझनाहट, दर्द
- कान के नीचे गर्दन पर और माथे पर मोटी तंत्रिकाएं (nerve)

हाथ एवं पांव

- हथेली या पैर के तलवे में सुन्नता - गर्म, ठंडा, दर्द, दबाव महसूस न होना
- पैर से चप्पल गिर जाए और पता न चले
- हाथ की उंगलियों की पकड़ में कमजोरी, हाथ से पकड़ी चीज़ों का फिसल कर गिर जाना, कपड़ों के बटन न लगा पाना
- हाथ/पैर की उंगलियों में झनझनाहट
- हाथ/पैर पर छाले, घट्ठे (मोटी खाल), घाव, घाव में दर्द न होना और लंबे समय तक न भरना
- उँगलियों का टेढ़ा हो जाना, छोटा हो जाना, कट जाना
- हाथ/पैर के मांसपेशिओं का दुबला हो जाना
- पंजे/कलई का झूल जाना, पैर घसीट कर चलना

आँख

- आँखों में लालपन, पानी आना, दृष्टि धुंध, अंधता, पलक बंद न होना

नाक

- नाक की हड्डी गलने से नाक का दब जाना

कुष्ठ रोग का इलाज

कुष्ठ रोग के इलाज के लिए MDT दवाएं सभी सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों व अस्पतालों में निशुल्क उपलब्ध है। MDT दवा Blister Calendar Pack (BCP) / पत्ते के रूप में मिलती हैं। एक पत्ते में 28 दिनों की दवा होती है।

कुष्ठ रोग दो प्रकार का होता है - MB और PB

MB कुष्ठ के लिए 12 MB MDT Blister Pack, 12 महीने की अवधि में खाना होता है। इसमे 3 प्रकार की गोलियां होती हैं। 10 से 14 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए MB Child MDT और 14 वर्ष से बड़े लोगों के लिए MB Adult MDT दी जाती है। प्रत्येक पत्ते की पहली खुराक (Supervised Dose) रोगी स्वास्थ्य कर्मी के सामने खाता है। पहली खुराक के बाद पेशाब का रंग कुछ लाल सा हो सकता है परन्तु रोगी घबराए नहीं। बाकी गोलियां रोगी को प्रतिदिन blister pack में दिये क्रम अनुसार खाना होता है।

PB कुष्ठ के लिए 6 PB MDT blister pack, 6 महीने की अवधि में खाना होता है। इसमे 2 प्रकार की गोलियां होती हैं। 10 से 14 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए PB Child MDT और 14 वर्ष से बड़े लोगों के लिए PB Adult MDT की दवा दी जाती है।

Treatment of Leprosy with Multi Drug Therapy (MDT)			
	Adults	**Child (less than 14 years of age)**	**Duration**
PB	PB Adult	PB child	6 months
MB	MB Adult	MB child	12 months

लेपरा रिऐक्शन, न्युराइटिस (Lepra Reaction, Neuritis) के लक्षण

कुष्ठ रोगियों में उपचार से पहले, उपचार के दौरान या उपचार के बाद लेपरा रिऐक्शन, न्युराइटिस हो सकता है, लक्षण दिखते ही रोगी डॉक्टर से तुरन्त संपर्क करें।

- त्वचा के धब्बों में लालिमा और सूजन
- तंत्रिकाओं में झनझनाहट और सूजन
- बुखार, जोड़ों में दर्द और सूजन
- आँखों में लालपन, पानी आना, दृष्टि धुंध, अंधता, पलक पूरी बंद न होना
- हाथ, पैर, आँख की मांसपेशियों में कमजोरी, लकवा मार जाना
- त्वचा में मटर के दानें जैसी गाठें, गाठों में घाव होना

MB कुष्ठ रोग का उपचार (Treatment)

एम.बी. अडल्ट एवं चाइल्ड ब्लिस्टर कैलेंडर पैक
(MB Adult and Child BCP)

मन्थली सुपरवाईज्ड डोज़
Monthly Supervised Dose

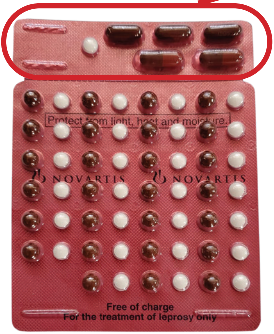

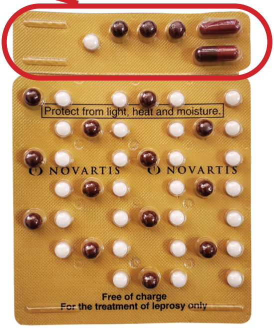

एम.बी. अडल्ट - Pink
(14 वर्ष से अधिक आयु के लिए)

एम.बी. चाइल्ड - Yellow
(10-14 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए)

PB कुष्ठ रोग का उपचार (Treatment)

पी.बी. अडल्ट एवं चाइल्ड ब्लिस्टर कैलेंडर पैक
(PB Adult and Child BCP)

मन्थली सुपरवाईज्ड डोज़
Monthly Supervised Dose

पी.बी. अडल्ट - Green
(14 वर्ष से अधिक आयु के लिए)

पी.बी. चाइल्ड - Blue
(10-14 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए)

आँखों की देखभाल

आँखों का प्रतिदिन निरिक्षण एवं दृष्टि क्षमता की जाँच

आँखों का निरिक्षण दिन में कम से कम दो बार अवश्य करें। आइने में आँखों को देखें। सुनिश्चित करें कि आँखों में कोई धूल के कण, कीट, कीड़े–मकौड़े, पलक के बाल इत्यादि तो नहीं हैं।

प्रतिदिन 6 मीटर की दूरी से किसी वस्तु या शब्द को दोनों आँखों से बारी–बारी (एक आँख बन्द करते हुए) देखकर पहचानें।

आँखों में सूखापन से बचाव, सफाई और नमी बनाए रखने के लिए प्रतिदिन, कम से कम 2 से 3 बार साफ पानी में आँखें डुबाएं। आँखों की नमी बनाएं रखने के लिए नियमित रूप से पलक झपकते रहें। धूल, धूप, धुआँ, कीड़े, मक्खी इत्यादि से आँखों को बचाएं। दुपट्टा, साड़ी के पल्ले, तौलिये, चश्मा/गौगल्स से प्रभावित आँख को ढक लें। पुरुष चश्मा/गौगल्स, पहनें। कपड़े से प्रभावित आँख ढक कर रख सकते हैं। आँखों पर कपड़ा बाँध कर, मच्छरदानी के अन्दर सोयें।

आँखों की पलकों का व्यायाम (जिनकी आँखें पूरी तरह बन्द ना हो)

आँखों के बाहरी किनारों की त्वचा को उंगली से बाहर की ओर खीचंकर 1 से 10 की गिनती तक रूकें। 10 बार दोहराएं। इसी तरह आँखें कस कर बंद करें ओर 10 की गिनती तक रूकें। दोनो व्यायाम दिन में बार–बार दोहराएं।

पैरों की देखभाल (यदि पैरों में सुन्नता है)

अधिक दबाव, रगड़ खाना, गर्म वस्तुओं से छू जाना, आग से जल जाना या नुकीली चीजें चुभ जाने से पैरों में लालपन, छाले, घाव लगने के कारण होते हैं। सुन्न पैरों में चोट लगने पर दर्द न होने के कारण घाव की उचित देखभाल नहीं होती है।

खड़े होते, चलते और बैठते समय पैरों की सुरक्षा करें। हमेशा जूता या चप्पल पहन कर ही चलें। अधिक समय के लिए खड़े न रहें, कुर्सी पर बैठें। पालथी मार कर न बैठें। पैरों को सामने सीधे रखकर बैठें। चलते समय छोटे छोटे कदम लें।

एक साथ लम्बी दूरी तय न करें। कंकड़, पत्थर, काँटे, झाड़ियों से बच कर चलें। स्कूटर, बस इत्यादि का प्रयोग करें।

Micro-celluler rubber जूते–चप्पल का प्रयोग करें जिसकी बाहरी सतह सख्त हो और अन्दर की सतह मुलायम हो। सही नाप के जूते/चप्पल पहनें, न ढीले हों न 'टाइट' हों। जूते में मेटल के बकल नहीं होने चहिए जिससे पैरों पर किसी प्रकार का दबाव बनें। 'बकल' के स्थान पर वेलक्रो टेप लगे बेल्ट होने चहिए। चप्पल में पीछे की तरफ बेल्ट लगा हो।

छालों को फोड़ें नहीं। छाले या घाव वाले हिस्से को साफ करके, उस पर साफ मुलायम कपड़े से पट्टी बांधें।

हाथों की देखभाल

प्रतिदिन हाथों का निरिक्षण

प्रतिदिन अपने हाथों का निरिक्षण करें। सुन्न हाथों पर दबाव पड़ने पर छाले हो जाते हैं। हाथों के छाले को फोड़े नहीं। छाले वाले हिस्से को साफ करके, उस पर रूई रख कर साफ मुलायम कपड़े से पट्टी बांधें।

यदि हाथों की त्वचा लाल हो गई है, किसी हिस्से में गर्म महसूस हो रहा है, सूजन, जलन या दर्द है, तो समझ लें कि हाथों को चोट लग रही है। हाथों को आराम दें। यदि गर्म वस्तु या आग के संपर्क में आकर हाथों पर असर हुआ है तो गर्म वस्तुओं से दूर रहें। भविष्य में भी ऐसे वस्तुओं को हाथों से न पकड़ें।

हाथों पर दबाव से सुरक्षा

सुन्न हाथों पर दबाव पड़ने पर छाले हो जाते हैं। हथोड़ा, कुदाल, कुल्हाड़ी, रॉड, चाकू, कैंची जैसे औजार को कस कर पकड़ें जिससे त्वचा रंगड़ न खाए और इनकी पकड़ने वाले हिस्से में मुलायम कपड़ा लपेटे या रबड़ का कवर चढ़ाएं। Gloves पहनने से हाथ सुरक्षित रहते हैं।

हाथों में लालपन, सूजन, छाले होने के कारण–

- सख्त औज़ारों का इस्तेमाल
- खुरदरी, नुकीली या भारी वस्तुओं को उठाना
- भारी वस्तुओं को खींचना
- गर्म वस्तुओं को छूना, आग के पास जाना, भाप से सपंर्क

लालपन, सूजन, छाले आगे जा कर घाव का रूप ले सकते हैं। ऐसा होने पर तुरन्त हाथों को आराम दें। मुलायम कपड़े और रूई से पट्टी करें।

हाथों को कील, काँटे, खरोंच और चोट से बचाव करें। आग और गर्म वस्तुओं को सुरक्षित विधि से इस्तेमाल करें।

गर्म वस्तुओं को पकड़नें के लिए सूती कपड़े के दस्तानें (gloves), सूती कपड़े या चिमटा/ tongs/ holder आदि का प्रयोग करें। खाना बनाते समय लम्बे हैडंल वाले लकड़ी के चम्मच का इस्तेमाल करें, यह गर्म खाने के भाप से हाथों को जलने से बचाता है।

गरम खाना चम्मच से खायें।

हाथों और पैरों की त्वचा के सूखापन का ध्यान रखें

पसीना न आने के कारण त्वचा सूखी हो जाती है। सूखी त्वचा में दरारें पड़ जाती हैं और घाव बन जाता है। त्वचा को मुलायम रखने के लिए नियमित रूप से दिन में दो बार निम्न कदम उठाएं–

1) 20-30 मिनट हाथ/पैर सादे पानी में डुबा कर रखें।

2) जब त्वचा पूरी तरह भीग जाएं, तब कड़ी त्वचा खुरदुरे पत्थर या सख्त कपड़े से धीरे-धीरे हटाएं। ध्यान रहे कि एक ही दिन में कड़ी खाल को हटाने की कोशिश न करें। इतना न रगड़ें कि त्वचा लाल हो जाए और खून निकलने लगे।

3) भीगे हाथ/पैर के पानी को न पोंछें। गीले में ही तेल/क्रीम या वैसलीन लगाकर मालिश करें।

हाथों और पैरों का व्यायाम

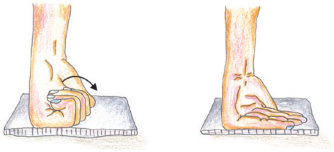

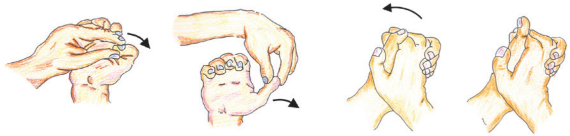

मांसपेशियों की कमजोरी के कारण मुड़ी उंगलियों और पैर के पंजे की व्यायाम करें।

पंजे के उपर से कपड़ा घुमाकर एक-एक सिरा दोनों हाथों से पकड़ कर अपनी ओर खींचे। 10 की गिनती तक खींच कर रखें। ऐसा करने से पंजे की जोड़ के पास की मांसपेशियों में खिंचाव होगा।

हाथ/पैर की उंगलियों और पंजे का व्यायाम करें। बिना हाथ या कपड़े का सहारा लिए व्यायाम करें। व्यायाम करते समय सभी उंगलियों और पंजे की गांठों (joints) को अपनी मांसपेशियों की शक्ति से चलाएं। हर व्यायाम को 20 बार दोहराएं। ऐसा दिन में कम से कम 2 से 3 बार करें।

Acknowledgement : ILEP
Illustrations: Ar. Tushar Pathak

Signs & Symptoms of Leprosy in Skin

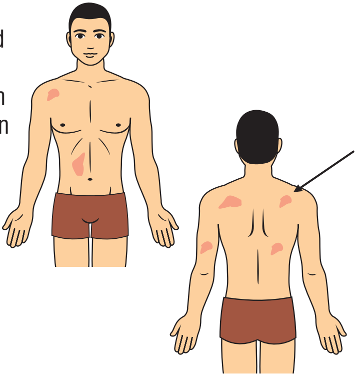

1. Thickened skin
2. Shiny skin
3. Warm skin
4. Nodules/ ulcerated nodules

Skin patch

5. Lighter in colour or reddish
6. Loss of sensation
7. Loss of hairs
8. Swollen

Signs & Symptoms of Leprosy in Face and Neck

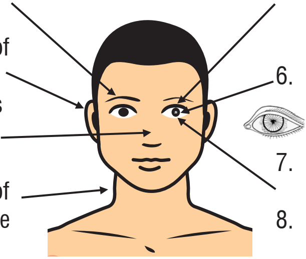

1. Loss of eyebrows
2. Thickening of earlobes or with nodules
3. Depressed nose
4. Thickening of nerve on side of neck
5. Unable to close eye lids completely
6. Distorted pupil of eye (not a complete circle)
7. Blurred vision/ blindness
8. Redness and watering of eye

Signs & Symptoms of Leprosy in Hands

1. Loss of sensation in palm, inability to feel touch, pressure, pain, cold or hot objects
2. Weakness in hand and fingers when grasping or holding objects
3. Thickening of nerve on arm, near elbow or wrist
4. Tingling/pain in the nerve of arm, near elbow or wrist
5. Swelling in hand or fingers
6. Deformity of fingers or thumb (clawing)
7. Shortening of finger
8. Cracks, wounds, scars, painless ulcer in palm

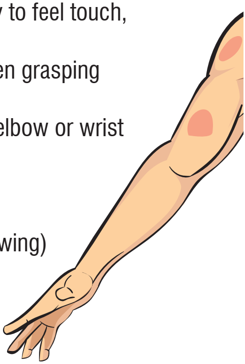

Signs & Symptoms of Leprosy in Legs

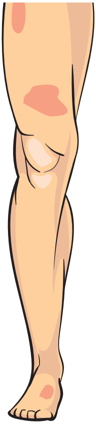

1. Loss of sensation in sole of foot, footwear slips off unaware
2. Weakness in foot, unable to lift foot, dragging of foot while walking
3. Thickening of nerves near the knee or inner side of ankle

5. Tingling/pain in nerves near knee or foot
5. Swelling of foot or toes
6. Deformity of toes (clawing)
7. Loss of part or whole of toe
8. Cracks, wounds, scars, painless ulcer in sole

World Health Organization

India